Artistic Narration Vol. XV No. 1 Jan.-June 2024 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.898 (SJIF)

टाइपोग्राफी का विज्ञापन में महत्व और भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० ओ०पी० मिश्रा
(प्राचार्य)
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी
देहरादून, उत्तराखण्ड
ईमेलः mishraop200@gmail.com

नीलकमल सक्सेना
शोधार्थी, ललित कला विभाग
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड
टेक्नोलॉजी देहरादून, उत्तराखण्ड

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० ओ०पी० मिश्रा,
नीलकमल सक्सेना

टाइपोग्राफी का विज्ञापन में महत्व और भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Artistic Narration 2024,
Vol. XV, No. 1,
Article No. 11 pp. 65-69

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2024-vol-xv-no1-233

सारांश

कला का ही एक रूप विज्ञापन कला है। यह कला सदैव से बाजारवाद से प्रेरित रही है, जिसमे कलाकार विज्ञापन हेतु अनेक प्रविधियों का प्रयोग करता है। जिनमे टाइपोग्राफी एक महत्वपूर्ण प्रविधि है। इस के प्रयोग से विज्ञापनकर्ता अपना सन्देश सरलता से अपने ग्राहकों तक पहुँचता है। जब कोई एप्लाइड कलाकार इस विधा का अपने विज्ञापन में प्रयोग करता है तो वह शब्दों के गुंथन और लिपि के वर्णात्म और सजावटी प्रयोगो से चमत्कार उतपन्न करता है। आज के समकालीन समय में इस विधा का प्रयोग लगभग –लगभग सभी प्रकार के विज्ञापनों में होता है।

मुख्य बिंन्दु

टाइपोग्राफी, कला, विज्ञापन, तकनीक, फॉन्ट इत्यादि।

प्रस्तावना

टाइपोग्राफी एक कला है जिसमें आप शब्द को कैसे दिखाते हो, आपके फोंट को कैसे इस्तेमाल करते हो और किस तरह से अपना मैसेज यूर्जस को पहुँचाते हो, सरल तरीके से बताया जाता है। इसको ही टाइपोग्राफी कहा जाता है। तथा टाइपोग्राफी में विभिन्न प्रकार के फोंट का प्रयोग अलग–अलग उद्देश्य के लिये किया जाता है, जिसका उल्लेख आगे लेख में किया जायेगा।

किसी भी डिजाइन में लिखा हुआ जितना भी टैक्स्ट होता है, वह सब टाइपोग्राफी के अंर्तगत आता है, टाइपोग्राफी का किसी डिजाइन या एड में होना बहुत जरूरी है, क्योंकि वह उसे एक प्रसंग प्रदान करता है तथा उस डिजाइन के विशय में काफी कुछ व्यक्त भी करता है। कला एक खूबसुरत देखने वाली किसी चित्रकार की कृति हो सकती है, जिसमें वह आर्टिस्ट अपने हिसाब से आकार प्रदान कर सकता है तथा अपने पसंद से उसको निर्मित कर सकता है। लेकिन यदि कोई चीज डिजाइन में प्रयोग हुयी है, वह उस डिजाइनर से ज्यादा उन लोगों के लिये ज्यादा महत्व रखती है। जिनके लिये वह बनायी गयी है। टाइपोग्राफी करते समय आपको कन्ट्रास्ट का बहुत ज्यादा ध्यान रखना होता है। अगर आप अपना ध्यान शुरू में केवल टाइपोग्राफी पर लगाये एक डिजाइनर के तौर पर और सही तरह से बनाने पर जोर दे तो यकीन मानिये आप अपने आप को बेहतर डिजाइनर के तौर पर साबित कर सकते हैं।

अगर आप टाइपोग्राफी को सीखते समय इसकी तकनीकों और ट्रिक्स पर ज्यादा ध्यान दें, बजाय इसके कि इसे एक आर्ट की तरह समझे या बहुत सुंदर बनाने की कोशिश करें तो ज्यादा सही होगा एक आर्टिस के लिये विशेष तौर पर जब आप शुरूआत कर रहे हैं तो आपको यह सलाह दी जाती है, कि आप ज्यादा से ज्यादा सेफ फॉंट का इस्तेमाल करें। इसका अर्थ ये है कि आपको फोंट दर्शक को पढ़ने में आसान रहे। बहुत ही सजावटी और कॉम्प्लीकेटिड फोंट का प्रयोग करने से बचना चाहिए। आसान और सरल टाइप फोंट का इस्तेमाल करना ज्यादा सेफ रहता है। अगर आप इस नियम को प्रयोग करके बनाते है तो वह चीज यकीनन आसान ही होगी, लेकिन अगर दर्शक को टाइपोग्राफी को पढ़ने में मुश्किल आ रही है, कलर्स, साइज और प्लेसमेंट में दिक्कत है, तो टाइपोग्राफी सफल नहीं होगी। अगर फोंट की कैटेगरी की बात करें तो इसे दो भागों में बाँट सकते हैं।

सेरिफ और सेंस सेरिफ कारपोरेट या प्रिंट में ज्यादातर प्रयोग किये जाने वाला फोंट है। यह एक रोयल फोंट है। इस फोंट के अक्षर में थोड़ा सा पूछ जैसा कुछ निकला हुआ दिखेगा। टाइस न्यू रोमन फोंट

एक सेरिफ फोंट का एक काफी अच्दा उदाहरण है। **टाइम्स ऑफ इण्डिया** : न्यूजपेपर का जो फोंट है, वह भी सेरिफ फोंट को यूज करके ही बनाया गया है। मैगजीन का लोगों भी सेरिफ फोंट का प्रयोग करके बनाया गया है। सैंस सेरिफ यहाँ पर सेंस का मतलब है बिना अतः इसका अर्थ है बिना टेल या पूछ के। यह फोंट साधारण और सिम्पल दिखने वाला फोंट है। हिन्दुस्तान टाईम्स न्यूजपेपर का फोंट सेंस सेरिफ फोंट को यूज करके बना है। तथा फिल्मफेयर मैगजीन का फोंट भी सैंस सेरिफ फोंट को यूज करके बनाया गया है।

डेकोरेटिव या सजावटी फोंट :–ये ना सेंस सेरिफ है ना सेरिफ है, वास्तव में इसका प्रयोग विषय को आकर्षक और सुन्दर बनाने के लिये किया जाता है, जिसका उद्देश्य दर्शक को अपनी ओर आकर्षित करना होता है। ताकि लोग अपना खुद का पैंर्टस बनाते हैं। यह कम्पलीट कस्टमाइज फोंट है अगर देखे तो किसी भी तरह का इसका आकार हो सकता है, गोल, सीधा या किसी और तरह का भी हो सकता है।

अब अगर तकनीक की बात की जाये तो किसी भी टाइपोग्राफी को क्रियेट करने के लिये कुछ बेसिक नियम को प्रयोग करना आवश्यक होता है। जैसे बेस लाइन, मध्य लाइन, डिसेंडर हाइट, असेंडर हाइट, टॉप लाइन और अगर पढ़ने के हिसाब से देखा जाये तो तो दो लाइनों के बीच कितना गैप छूटना चाहिये वह भी टाइपोग्राफी के लिये काफी महत्वपूर्ण है। दो लाइनों के बीच में 120 प्रतिशत का लीडिंग लाइन का गैप होना अनिवार्य है। पढ़ने योग्य रखने के लिये। इसके अलावा एक लाइन के अंदर कितने अक्षर अच्छे लगेंगे यह भी महत्वपूर्ण है सबसे अच्छा उदाहरण– एक लाइन में 60 अक्ष्ज्ञर होना चाहिये, क्योंकि यह दर्श को पढ़ने में आसान रहता है। एक लाइन को खत्म होने में तथा नई लाइन को शुरू होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा तथा पहली लाइन में उसने क्या पढ़ा था। वह भी उसे याद रहेगा और वह पहली लाइन को दूसरी लाइन से आसानी से कनेक्ट कर सकेगा। और यदि हम एक लाइन में अक्षरों की संख्या बढ़ाकर ज्यादा कर दे तो दर्शक को यह याद रखना मुश्किल हो जायेगा कि उसने शुरू में पहली लाइन में क्या–क्या पढ़ा था। ज्यादातर वेबसाइट पर भी 60 अक्षरों का ही प्रयोग किया जाता है। अब यदि मोबाइल स्क्रीन की बात करें तो उसमें सारणता 30–40 अक्षर का ही प्रयोग किया जाता है, क्योंकि मोबाइल की स्क्रीन छोटी होती है किसी भी डिजाइन में दो या तीन फोंट से अधिक फोंट का इस्तेमाल करना सही नहीं होता है। दो या तीन फोंट का प्रयोग किसी डिजाइन में अच्छा रहता है।

टाइप फेस

फोंट सलेक्शनः—फोंट का सलेक्शन डिजाइन या ऐड्स के हिसाब से किया जाता है, जिस तरह का डिजाइन होता है, जैसे यह अगर किसी गम्भीर विषय को लेकर होता है, या फनी या डरावनी विषय वस्तु पर आधारित होता है तो फोंट को उसी के हिसाब से तैयार किया जाता है। फोंट का कलर भी उसमें बहुत हद तक योगदान प्रदान करता है, जैसे यदि किसी महंगे या कीमती चीज का एड तैयार करना है, तो उसमें गोल्डन, सिल्वर, काले और सफेद रंगों का इस्तेमाल अधिक किया जाता है। इसके साथ ही उसी हिसाब के लग्जरी फोंट का इस्तेमाल भी किया जाता है। बहुत ही पतले या सेंस सेरिफ फोंट का इस्तेमाल इसमें किया जाता है।

फोंट को प्रयोग करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि वह किस परिस्थिति के लिये प्रयोग किया जा रहा है। यदि वह बहुत ही प्रीमियम दिखने वाली चीज है, तो फोंट को देखकर प्रीमियम फीलिंग्स आनी चाहिए। यदि उसमें कोई फनी फोंट का इस्तेमाल करेंगे तो वह दिखने में बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगेगा। इसी प्रकार यदि आपका प्रोडक्ट काफी साधारण किस्म का फोंट इस्तेमाल कर रहे हैं तो वह जरूरत से ज्यादा लगेगा जो कि ठीक नहीं है। अगर हमें ब्रांड को मार्डन और लग्जरी दिखाना है, जैसे कोई, इलैक्ट्रॉनिक प्रॉडक्ट तो उसमें ज्यादातर सेंस सेरिफ फोंट का इस्तेमाल किया जाता है। इसी प्रकार लीडिंग और लाइन स्पेसिंग का ध्यान रखना भी आवश्यक है दो लाइनों के बीच का गैप ना तो बहुत ज्यादा रखना चाहिये ना कम तब ही ठीक रहता है।

कर्निंग : एक ही शब्द में दो अक्षरों के बीच की दूरी को ही कर्निंग कहते हैं।

हाइरेस्की :—किसी डिजाइन या ऐ डमें बॉडी टैक्स्ट जितना लिया जाता है, उसका 150 प्रतिशत या ढेढ़ गुना सब हेडिंग्स को लिया जाता है, तथा मेन मुख्य हेडिंग्स को बॉडी टैक्स्ट का तीन गुना यानि 300 प्रतिशत लिया जाता है। यदि अगर रंगों की बात की जाये तो हल्के बैकग्राउण्ड पर गहरे रंग का फोंट और गहरे बैकग्राउण्ड पर हल्के रंग के फोंट का इस्तेमाल करना ठीक होता है तथा वेबसाइट आदि का यदि बहुत अधिक कटेंट है, तो उसको हल्के बैकग्राउण्ड के साथ गहरे रंग के फोंट का इस्तेमाल करना ठीक होता है, ताकि हमारी आँखों पर अधिक जोर ना पड़े। अलाइनमेंट की बात करें तो पढ़ने के लिहाज से सेंटर अलाइनमेंट फोंट की अपेक्षा लेफ्ट अलाइनमेंट फोंट अधिक ठीक रहता है। जो दर्शक को पढ़ने में आसानी देता है। वास्तव में किसी कहानी, नाटक या डिजाइन की ही बात करें तो उसके अन्तर्गत एक दर्शक को क्या प्राप्त होने वाला है, उसका अनुमान काफी हद तक टाइपोग्राफी से ही लगाया जा सकता है। विभिन्न मनोदशाओं और रूझानों को केवल चित्र की सहायता से नहीं बल्कि काफी हद तक टाइपोग्राफी की सहायता से समझना आसान होता है।

टाइपोग्राफी क्या हैः—टाइपोग्राफी अक्षरों और पाठ को इस तरह से व्यवस्थित करने की कला है जो दर्शक या पाठक के लिये स्पष्ट और दष्श्यमान रूप से आकर्षक बनाती है। अगर इसके इतिहास की बात करें तो 11वीं शताब्दी से पूर्व किताबों, पत्रिकाओं और सार्वजनिक कार्यों में टाइपोग्राफी का अधिक इस्तेमाल होता था। आजकल तो डिजिटली सारी चीजें असान हो गयी है। लेकिन पहले हाथ से टाइपोग्राफी का कार्य किया जाता था। गुटेनबर्ग बाइविल में प्रयुक्त प्रकार की शैली को अब टैक्स्टुरा नाम से जाना जाता है। और आय इसे प्रमुख डेस्क्टॉप के मेनू में पायेंगे।

टाइपोग्राफी क्यों महत्वपूर्ण हैः– टाइपोग्राफी केवल सुंदर फॉन्ट चुनने से कहीं अधिक है। अच्छी टाइपोग्राफी एक मजबूत दृश्य पदानुक्रम स्थापित करेगी, वेबसाइट को सन्तुलन प्रदान करेगी। अच्छी टाइपोग्राफी न केवल वेबसाइट के व्यक्तित्व को बढ़ाएगी बल्कि आपके उपयोगकर्ता आपकी साइट पर प्रदर्शित टाइपकेस को आपके ब्रांड के साथ जोड़ना शुरू कर देंगे। अच्छी टाइपोग्राफी आपको आपके उपयोगकर्ता के साथ विश्वास स्थापित करने में मदद करता है। और आपके ब्रांड को आगे बढ़ाने में सहायता करेगी तथा ध्यान आकर्षित करने वाला फॉन्ट कमजोर फॉन्ट की तुलना में अधिक प्रेरक होता है, जो आपके संदेश को आसानी से दर्शक के मन मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है, और उसका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करती है, जिससे कोई पाठक किसी मैगजीन ऐड को रूककर देखता है, तथा उसे पूरा पढ़ने को मजबूर होता है।

अतः हम यह कह सकते की विज्ञापन निर्माण में टाइपोग्राफी की भूमिका अहम् होती है। इस के आभाव में विज्ञापन कर्ता सरलता पूर्वक अपना कार्य सम्पादित नहीं कर सकता। इस विधा के माध्यम से ग्राहक को आकर्षित और संतुस्ट आसानी से किया जा सकता है।

सन्दर्भः

1. यादव, नरेन्द्र सिंह. विज्ञापन तकनीक एवं सिद्धांत. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ एकेडमी।
2. https://caseytempleton.com/blog/role-of-photography-advertising/
3. https://www.colormatics.com/
4. https://g.co/kgs/DDdHS6j
5. https://www.drishtiias.com
6. https://hi.quora.com
7. https://brainly.in/question/10102225
8. https://www.hindikunj.com/2021/06/vigyapan-aur-hamara-jeevan-nibandh.html